

दुआ-30

अदाए कर्ज के सिलसिले में अल्लाह तआला से तलबे एआनत की दुआ

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

ऐ अल्लाह! मोहम्मद (स0) और उनकी आल (अ0) पर रहमत नाज़िल फ़रमा और मुझे ऐसे कर्ज से निजात दे जिससे तू मेरी आबरू पर हर्फ़ आने दे और मेरा ज़ेहन परेशान और फ़िक्र परागन्दा रहे और उसकी फ़िक्र व तदबीर में हमहवक़्त मशगूल रहूं। ऐ मेरे परवरदिगार! मैं तुझसे पनाह मांगता हूं कर्ज के फ़िक्र व अन्देशे से और उसके झमेलों से और उसके बाएस बेख्वाबी से तू मोहम्मद (स0) और उनकी आल (अ0) पर रहमत नाज़िल फ़रमा और मुझे इससे पनाह दे। परवरदिगार! मैं तुझसे जिन्दगी में उसकी ज़िल्लत और मरने के बाद उसके वबाल से पनाह मांगता हूँ। तू मोहम्मद (स0) और उनकी आल (अ0) पर रहमत नाज़िल फ़रमा और मुझे माल व दौलत की फ़रावानी और पैहम रिज़क रसानी के ज़रिये इससे छुटकारा दे।

ऐ अल्लाह! मोहम्मद (स0) और उनकी आल (अ0) पर रहमत नाज़िल फ़रमा और मुझे फ़ुज़ूल खर्ची और मसारेफ़ की ज़ियादती से रोक दे और अता व मेयानारवी के साथ नुक्तए एतदाल पर कायम रख और मेरे लिये हलाल तरीकों से रोज़ी का सामान कर और मेरे माल का मसरफ़ उमूरे ख़ैर में करार दे और उस माल को मुझसे दूर ही रख जो मेरे अन्दर गुरूर व तमकनत पैदा करे या जुल्म की राह पर डाल दे या उसका नतीजा तुगयान व सरकषी हो। ऐ अल्लाह दरवेषों की हम नषीनी मेरी नज़रों में पसन्दीदा बना दे और इतमीनान अफ़ज़ा सब्र के साथ उनकी रिफ़ाक़त इख़्तियार करने में मेरी मदद फ़रमा। दुनियाए फानी के माल में से जो तूने मुझसे रोक लिया है उसे अपने बाक़ी रहने वाले ख़ज़ानों में मेरे लिये ज़ख़ीरा कर दे और इससके साज़ व बर्ग में से जो तूने दिया है और उसके सर्द सामान में से जो बहम पहुंचाया है उसे अपने जवार (रहमत) तक पहुंचने का ज़ादे राह, हुसूले तक़रीब का वसीला और जन्नत तक रसाई का ज़रिया करार दे इसलिये के तू फ़ज़ले अज़ीम का मालिक और सख़ी व करीम है।